हज़ार साल लंबी रात

- रत्न सिंह

सुनने वाले उसकी बात तन्मयता से सुन रहे थे। हालाँकि सुनाने वाला जवान सबके बीच लेटा हुआ था, बिलकुल ऊट-पटांग बातें कर रहा था। उसकी बातें बे-सिर पैर की थी। बात करते-करते वह खुद ही भटक जाता था, जैसे राह चलता मुसाफिर अपनी राह से भटक कर गलत रास्ते पर चलने लगे। एक बात अधूरी ही छोड़ कर वह दूसरी बात पकड़ लेता। इस तरह रात बहुत धीरे-धीरे सरक रही थी।

वह सब के सब रेलवे स्टेशन की तरफ जाने वाले बाज़ार की एक दुकान के गलियारे में आकर रात काटने के लिए लेट गए थे। थोड़ी देर बाद, जब उनमें से सबसे बूढ़े व्यक्ति ने गला साफ करते किसी राजा की बात शुरू की तो उस गलियारे में लेटे हुए सब के सब आदमी हुंकारी भरने लगे, "हूँ, फिर क्या हुआ बाबा।"

बस फिर क्या था, बात चल पड़ी ---

एक बादशाह था, उसकी सात रानियाँ थीं। सातों रानियों के लिए बादशाह ने अलग-अलग महल बनवाए। एक लकड़ी का, दूसरा ईंट का, तीसरा संगमरमर का, चौथा तांबे का, पाँचवाँ चाँदी का, छठा सोने का, और सातवाँ हीरे-जवाहरात का।

"बिलकुल ठीक", किसी ने हुंकारी भरी।

इतनी दौलत होने पर भी बादशाह के यहाँ औलाद नहीं थी। इसलिए वह बहुत दुखी था। आखिरकार, बादशाह को किसी ने राय दिया कि फुलाँ जंगल में एक पेड़ है, उस पर सात फल लगे हैं। अगर बादशाह फलों को तोड़ कर अपनी रानियों को खिलाए, तो सबको औलाद हो जाएगी। लेकिन मुसीबत ये थी कि उस पेड़ तक पहुंचना बहुत मुश्किल था। रास्ते में सात

नदियाँ पड़ती थीं और सात राक्षसों से मुकाबला करना पड़ता था और पेड़ के चारों तरफ सात साँपों का ज़बर्दस्त पहरा था। लेकिन बादशाह भी अपनी धुन का पक्का था, वह अपनी फौज लेकर चल पड़ा। बात अभी यहीं तक पहुंची थी कि बूढ़े व्यक्ति को खाँसी का दौरा पड़ा। उसने एक दूसरी बात चला दी।

बड़ी पुरानी बात है। एक कारीगर ने एक ऐसा डंडा बनाया जिसके अंदर एक आदमी बैठ सकता था। इस तरह वह डंडा आदमियों की तरह ही बोलता था, चलता था और खाता-पीता था।

"ठीक ठीक।" करीब-करीब सबने मिल कर हुंकार भरी।

फिर अचानक यह हुआ कि रिक्शों और तांगों का रेला शोर मचाता हुआ सड़क पर से गुज़रने लगा। शायद स्टेशन पर कोई रेलगाड़ी रुकी थी। इसलिए बूढ़ा थोड़ी देर रुका। फिर उसने एक मछली की बात शुरू कर दी जो इतनी बड़ी थी कि उसकी पीठ पर एक शहर बसा हुआ था। जिस पर नहीं मालूम, कितने ही मकान बने हुए थे। कितने ही खेत थे। समंदर में जिस तरफ ये मछली जाती, उस तरफ ये बसा-बसाया शहर चला जाता।

"बिलकुल ठीक।" सब ने मिल कर हुंकार भरी।

इस तरह रात बहुत धीरे-धीरे गुज़र रही थी। बूढ़ा बातें किया जा रहा था और वह सब के सब बड़े गौर से सुन रहे थे। फिर किसी बात को अधूरी ही छोड़ कर बूढ़े ने एक नई बात शुरू कर दी।

हज़ारों साल पहले की बात है, एक बादशाह ने आधी दुनिया पे विजय प्राप्त कर ली।

"फिर"

फिर इसी खुशी में बादशाह ने एक बहुत बड़ी दावत दी।

"फिर, फिर"

फिर क्या, इतना खाना बनाया गया कि बादशाह के शहर के सारे के सारे मकानों में खाना बना-बना कर रखा गया।

"फिर, फिर"। सभी आदमी एक साथ हुंकारी भर रहे थे।

बूढ़े ने कहना शुरू किया।

"सबसे पहले बादशाह और उसके रिश्तेदारों ने खाना खाया।"

"ठीक"

फिर बादशाह के सैकड़ों मंत्रियों ने खाना खाया।

"ठीक"

फिर बादशाह के हज़ारों सिपाहियों और खास लोगों ने खाना खाया।

"ठीक"

इतने लोगों के खाना खाते-खाते रात हो गई।

"ठीक"

और सबके बाद रात में लाखों गरीबों ने पेट भर के खाना खाया।

"बिलकुल झूठ। बिलकुल झूठ।" उस गलियारे में लेटे हुए सभी आदमी विरोध में खड़े हो गए, और उन में से एक व्यक्ति बोला, "झूठे तुझे झूठी बातें करते हुए शर्म नहीं आती। अगर हमने रात को पेट भर कर खाना खाया होता तो इस समय चैन की नींद ना सो रहे होते। रात भर तुम्हारी ये बकवास कौन सुनता?"

"अरे भाई, नाराज़ क्यों होते हो?" बूढ़े ने कुछ सहमी हुई आवाज़ में कहा, "मैं भी तुम्हारी तरह भूखा हूँ। अगर मुझे ही नींद आ रही होती तो ये बातें करने के लिए जागता होता? मैं भी .... तो सो जाता।"

टाईपिस्ट - मो० मेहदी खान रन्नवी